प्रागैतिहासिक अतिशय क्षेत्र नवागढ़

जिला ललितपुर (उ.प्र.)

परिकल्पना : ब्र. जयकुमार जैन 'निशांत' 7974010134

छायांकन : राजीव जैन चन्द्रपुरा, टीकमगढ़

पुण्यस्मृति : कीर्तिशेष श्री नरेन्द्र कुमार-श्रीमती रीता जैन सुपुत्र- अनुपम-मीनाक्षी जैन, संयम, श्रेया जैन लोक विहार दिल्ली

प्राप्ति स्थान : प्रागैतिहासिक अतिशय क्षेत्र नवागढ़, पोस्ट सोजना, ललितपुर (उ.प्र.) पिन-284405 सम्पर्क- 6393700366

: इंजी. शिखरचन्द्र जैन, 'पुष्पांजलि', नगर भवन के पीछे, टीकमगढ़ (म.प्र.) सम्पर्क-6260840083

प्रकाशक : पं. गुलाबचन्द्र पुष्प प्रतिष्ठाचार्य स्मृति ट्रस्ट, टीकमगढ़ (म.प्र.) पिन-472001

लागत मूल्य : 500/-

ईमेल : Navagarhtirth@gmail.com

वेबसाइट : www.navagarh.in

avs graphics
9893515842

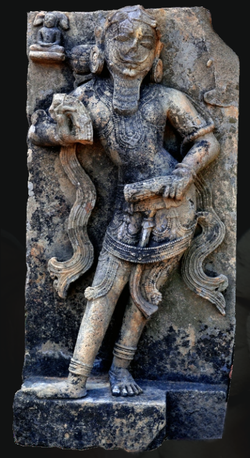

नवागढ़ विरासत

प्रागैतिहासिक साक्ष्य

8 अप्रैल 1959 को पं. गुलाबचन्द्र पुष्प एवं साथियों द्वारा अन्वेषित नवागढ़ क्षेत्र के प्रांगण में कई जिनालयों के अवशेष, शताधिक खण्डित प्रतिमाएँ, कलाकृतियाँ तथा 8 सांगोपांग प्रतिमाएँ प्राप्त हुई थीं।
अन्य साक्ष्य निम्न हैं, यथा -

- पुरापाषाण कालीन औजार (2 से 5 लाख वर्ष प्राचीन)
- शैलाश्रय (हजारों वर्ष प्राचीन)
- पेट्रोलिक कप मार्क (10 हजार वर्ष प्राचीन)
- रॉक पेंटिंग (8 हजार वर्ष प्राचीन)
- रॉक आर्ट (गुप्तकाल-तीसरी सदी)
- मिट्टी पाषाण के मनके (2 हजार वर्ष प्राचीन)
- प्रतिमाएँ (प्रतिहार काल से आज तक)

टौरिया

- मैनवार टौरिया
- मुंडी टौरिया
- सापौन टौरिया
- सिद्धों की टौरिया
- बगाज टौरिया
- जैन टौरिया

रॉक्स

- टॉर्ट्वाइज रॉक
- मटकाटोर रॉक
- फाईटोन रॉक
- बैलेंस रॉक
- मैटेलिक साउण्ड रॉक
- हैंगिंग रॉक

शैलाश्रय

- साधना शैलाश्रय
- आचार्य शैलाश्रय
- उपाध्याय शैलाश्रय
- साधु शैलाश्रय
- अध्ययन शैलाश्रय
- शयन शैलाश्रय

पुरातन नगरीय साक्ष्य

- चंदेल बावड़ी
- चंदेल कूप
- मिट्टी पाषाण के मनके
- धातु उपकरण
- काष्ठ उपकरण
- मृद भाण्ड उपकरण
- चंदेल कालीन ईंट
- मदनवर्मन प्रतिमा
- पाहल प्रतिमा
- महिचन्द्र प्रतिमा
- विभिन्न आभूषण

शीर्ष

- राजकुमार अरनाथ शीर्ष
- तीर्थंकर शीर्ष
- तीर्थंकर माता शीर्ष
- राजाओं के शीर्ष
- महारानी शीर्ष
- सामंत शीर्ष
- सामान्य शीर्ष

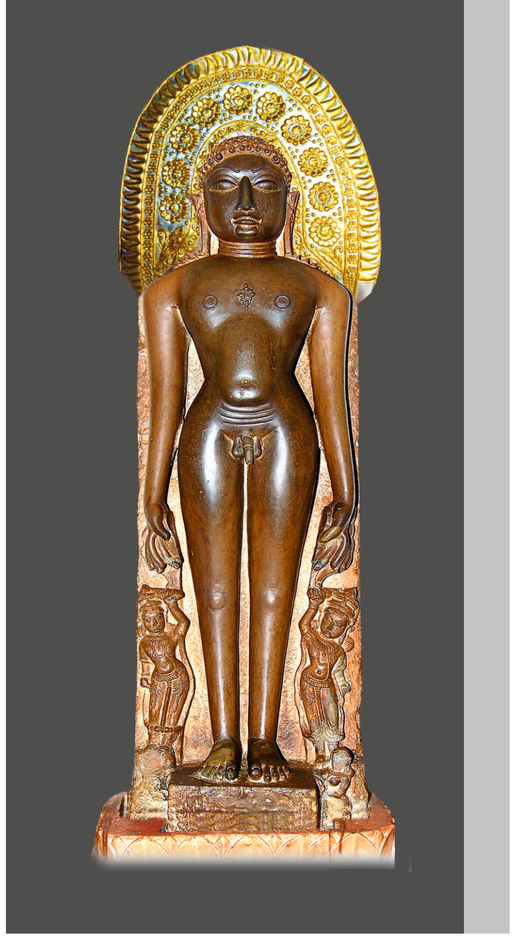

मूलनायक अतिशयकारी अरनाथ स्वामी

चित्ताकर्षक, नयनाभिराम, गाम्भीर्य प्रदीप्त मुखमण्डल,
विशिष्ट केश विन्यास, केश गुच्छ सहित लम्ब कर्ण,
मनोज्ञ श्रीवत्स, मानवाकार उद्दरावलि, सुडोल जंघा
विलक्षण अंगुलाकृति, युगल चमरधारी एवं
समर्पित श्रावक-श्राविका के साथ पाद पीठ का
अलंकरण मीन चिन्ह द्वारा, देशी पाषाण पर
पन्ना की पॉलिश से शोभायमान, धरातल से
15 फीट नीचे भौंयरे में विराजमान 4 फीट 9 इंच
अवगाहना वाले अरनाथ भगवान् आज भी जन-जन की
मनोकामनाएँ पूर्ण कर रहे हैं।

कलात्मक शीर्ष

नवागढ़ में संगृहीत विलक्षण, मनोज्ञ, चित्ताकर्षक,
विभिन्न शासकों, सामंतों, महारानियों, महिलाओं के
शीर्षों से यह राजनैतिक, शैक्षणिक, व्यावसायिक महानगर
सिद्ध होता है। इन विभिन्न मुकुट शीर्षों की कला एवं शिल्प
पुरातात्त्विक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से अति महत्त्वपूर्ण है।

इन शीर्षों का रासायनिक संरक्षण अनिवार्य है।

संरक्षित मूर्ति शिल्प

नवागढ़ में संगृहीत द्विशताधिक मूर्ति एवं कलाशिल्प
विशाल जिनालयों में सुन्दर, मनोज्ञ, आकर्षक, प्राचीन
दिगम्बर प्रतिमाओं के साथ नगरीय सभ्यता, जैन बाहुल्य क्षेत्र
राजनैतिक, पुरातात्त्विक नगर की स्थापना के साक्ष्य हैं।

उपरि-परिकर में सम्पूर्ण कलात्मकता दृष्टव्य है।
यथा- त्रिछत्र, मृदंगवादक, अभिषेक करते गजराज,
सम्पूर्ण कलश, तीर्थंकर समूह आदि शोभायमान एवं
चित्ताकर्षक हैं।

पुरातन वृषभ रथ

अष्ट धातु से निर्मित लघुकाय वृषभ रथ की सम्पूर्ण रचना मनोज्ञ एवं आकर्षक है।

वृषभ, सारथी, पहिए एवं शिखर के साथ सम्पूर्ण रथ भारतीय कला एवं सांस्कृतिक विरासत का विशिष्ट शिल्प है।

जीवनोपयोगी उपकरण

नवागढ़ में खनन से प्राप्त धातु उपकरणों के साथ जीवनोपयोगी सामग्री यथा- लकड़ी की पोली, चौथिया पैला (अनाज मापक उपकरण), लकड़ी की पसात तौलने के बाँट, धातु की चुनौटी, घोड़ा, हिरण, वृषभ, पानदान, श्रृंगारदान, पिचकारी, दवात, कलश एवं कांसा, तांबा, पीतल के रसोई के बर्तन संगृहीत हैं।

कच्छप शिला

नवागढ़ से 3 किमी. दूर पश्चिम में फाईटोन शिलाओं के निकट जैन पहाड़ी पर 25 फीट लम्बी, 15 फीट ऊँची कच्छप शिला स्थित है।
शिला के अधोतल में ब्र. जयकुमार 'निशांत' द्वारा अन्वेषित''चितेरों की चंगेर'' के नाम से प्रसिद्ध शैलचित्रों की श्रृंखला प्राकृतिक रंगों से बनाई गयी थी, जो संरक्षण के अभाव एवं मौसम की प्रतिकूलता से क्षत-विक्षत हो चुकी है।

चंदेलकालीन बावड़ी

क्षेत्र के पूर्व में 500 मीटर की दूरी पर 1000 वर्ष प्राचीन 40 फीट चौड़ी एवं 35 फीट गहरी, ईंट एवं पाषाण से निर्मित बावड़ी चंदेल शासक मदनवर्मन की धरोहर है, जो रख-रखाव के अभाव में नष्ट होने की कगार पर थी, जिसका जीर्णोद्धार नवागढ़ समिति के प्रयास से किया गया है।

इस बावड़ी में दोनों ओर से सीढ़ियाँ इस प्रकार निर्मित की गई हैं कि व्यक्ति पानी की सतह तक जाकर पानी ला सकता है।

शैलचित्र

मानवीय सभ्यता का उत्थान पुरा पाषाण काल से
वर्तमान तक सदैव विकासशील रहा है।
प्राकृतिक वन्य जीवन-यापन करते हुये मानव ने
गुफाओं एवं कंदराओं का आश्रय बनाया, वहाँ रहते हुये
उन्होंने प्राकृतिक रंगों से उस काल के परिवेश का चित्रण
करते हुये वन्य पशु, जन-जीवन, प्राकृतिक दृश्यों को
मुख्यता से अंकित किया है।

इस विधा से नवागढ़ की जैन पहाड़ी पर स्थित कच्छप शैलाश्रय में
विभिन्न शैलचित्रों के समूहों में जैनदर्शन के विशेष आयाम यथा-
वृषभ, पंचमहाव्रत, कषायनिग्रह, निषीथिका, केवलज्ञान सूर्य एवं
सिद्धत्व का सांकेतिक चित्रण किया गया है।

नवागढ़ में उत्खनन से प्राप्त प्राचीन ताम्र मुद्रायें भी दर्शनीय हैं।

पुरापाषाण औजार

नवागढ़ में भौगोलिक परिवर्तन से निर्मित विभिन्न टौरियों में
भूमिगत पुरापाषाण कालीन संस्कृति काल के आदिमानव द्वारा प्रयुक्त
पाषाण औजारों की शृंखला प्राप्त हुई है। डॉ. गिरिराज कुमार
(महासचिव रॉक आर्ट सोसाइटी ऑफ इंडिया, आगरा) के अनुसार इनका
काल प्री-पैलियोलिथिक (2 से 5 लाख वर्ष प्राचीन), मिडिल-पैलियोलिथिक
(35 हजार से 2 लाख वर्ष प्राचीन), पोस्ट-पैलियोलिथिक (35 हजार वर्ष
प्राचीन) है।

पेट्रोलिक कप-मार्क

सिद्धों की टौरिया की विशाल चट्टान पर 60X69X26.5 मिमी. का
कप-मार्क प्राप्त हुआ है। जिसके क्रिस्टलों का आकार 1.2-0.4 मिमी. है।
माइक्रोस्कोपिक परीक्षण से इसके बनाने की पद्धति, रचना एवं आकार से
यह 10 हजार वर्ष प्राचीन संस्कृति को सिद्ध करता है।

मिट्टी एवं पाषाण के मनके

प्राकृतिक जीवन एवं प्राचीन संस्कृति के शृंगार को दर्शाने वाले
दो हजार वर्ष प्राचीन मिट्टी एवं पाषाण के मनके उस काल की
मानव सभ्यता, विकास एवं नगरीय जन-जीवन के साक्ष्य हैं।

बैलेंस रॉक

जैन पहाड़ी के पीछे भौगोलिक परिवर्तन से कई चट्टानों की शृंखला एक-दूसरे पर अद्भुत रूप से व्यवस्थित है, इनके मध्य कौतुक पूर्ण अधर में लटकती विशाल शिला दर्शनीय एवं आकर्षण का केन्द्र है, पर्यटक इस पर पहँच कर रोमांचित एवं आनंदित होते हैं।

फाईटोन (फाईव स्टोन) रॉक

फाईटोन रॉक प्राकृतिक रूप से 30-40 फीट लंबी पाँच चट्टानें हैं, जिन पर पाषाण खंड अद्भुत एवं आश्चर्यपूर्ण ढंग से अवस्थित हैं इनके बीच में अध्ययन शैलाश्रय स्थित है। इसकी एक चट्टान 40 डिग्री झुकी हुई है, जो हैंगिंग रॉक के रूप में प्रसिद्ध है।

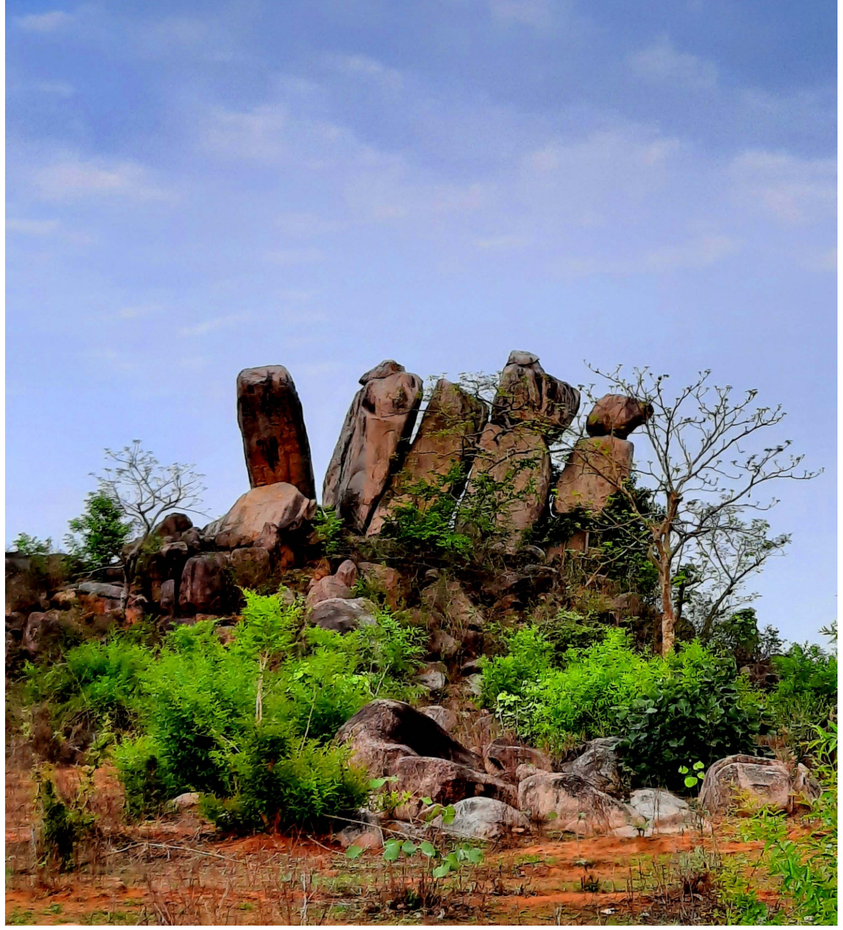

संत शयन शैलाश्रय

नवागढ़ में तीसरी सदी से जैन संतों का श्री विहार होने लगा था।
उस काल में यह महत्त्वपूर्ण साधनास्थल एवं गुरुकुल परम्परा का प्रमुख केन्द्र रहा है।
यहाँ संतों ने साधनास्थलों के साथ शयन शैलाश्रय भी अन्वेषित किये हैं, जिनमें से
जैन पहाड़ी की कच्छप शिला के आधार में शैलचित्रों के पास एक संत शयन स्थल है।
जिसकी ऊपरी सतह संतों के वर्षों तक शयन करने से अत्यंत चिकनी हो गई है,
जिसका मृदु एवं कोमल स्पर्श विशेष अनुभूति देता है।

रहस्यमय शैलाश्रयों के आत्मसाधक

क्षुल्लक श्री चिदानंद जी महाराज

आपने स्वप्रेरणा से सन् 1965 एवं 1966 में नवागढ़ में 2 चातुर्मास किये। आप आहारचर्या के पश्चात् बीहड़ में दो-दो, तीन-तीन दिनों के लिए प्रस्थान कर जाते थे, पर साधना स्थली कहाँ एवं क्या थी? यह ग्रामीणजनों के लिए रहस्य ही था, क्योंकि खोजने पर भी आपका पता नहीं मिलता था। इस रहस्य का उद्घाटन वर्तमान में ब्र. जयकुमार जी 'निशांत' द्वारा अन्वेषित संत शयन एवं साधना शैलाश्रय के माध्यम से हुआ।

आपने जैनागम के गूढ़ रहस्यों को जैन, जैनेतरों को बताते हुये अहिंसक एवं व्यसन मुक्त जीवनशैली का मार्ग प्रशस्त किया था।

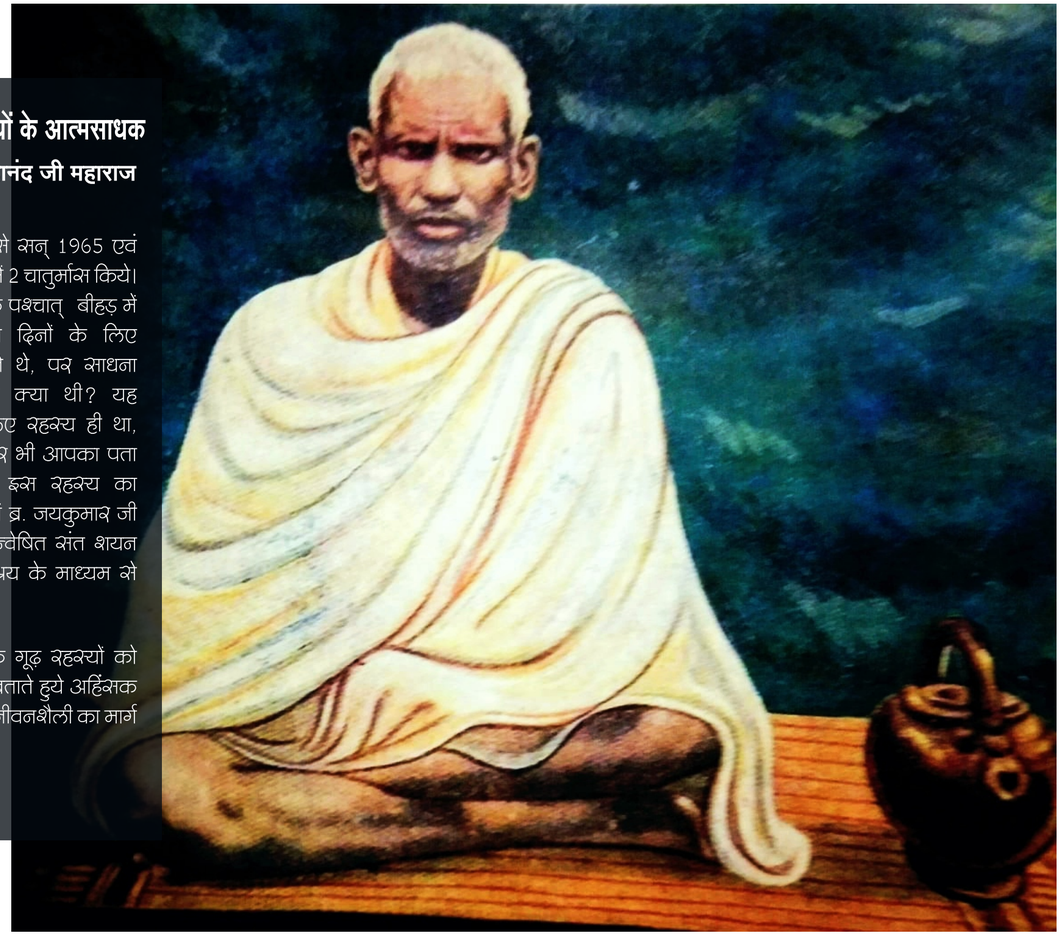

नवागढ़ क्षेत्र अन्वेषक
पं. गुलाबचन्द्र 'पुष्प'

प्रतिष्ठा जगत के पुरोधा
प्रतिष्ठा पितामह
सभी संतों में लोकप्रिय
आगम एवं सिद्धांत के मर्मज्ञ
सप्तम प्रतिमाधारी
जिन्होंनें समर्पित किया
अपना सम्पूर्ण जीवन ...।

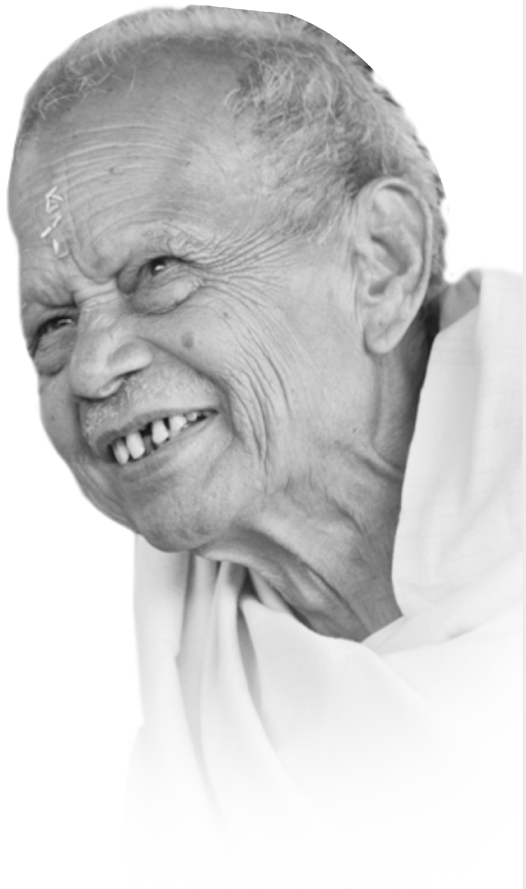

पुरातत्त्वान्वेषक–

श्री नीरज जैन, सतना	सन् 1961
डॉ. ए.पी. गौड़, लखनऊ	सन् 2013
डॉ. कस्तूरचन्द्र सुमन, श्रीमहावीर जी	सन् 2013
बा. ब्र. जयकुमार जैन 'निशांत', टीकमगढ़	सन् 2014, 2018
डॉ. स्नेहरानी जैन, सागर	सन् 2015
डॉ. भागचन्द्र भागेन्दु, दमोह	सन् 2015
डॉ. के.पी. त्रिपाठी, टीकमगढ़	सन् 2015
डॉ. एस.के. दुबे, झांसी	सन् 2016
श्री नरेश पाठक, ग्वालियर	सन् 2016
श्री हरिविष्णु अवस्थी, टीकमगढ़	सन् 2016
डॉ. गिरिराज कुमार, आगरा (राष्ट्रीय सचिव, वॉक आर्ट सोसाइटी ऑफ इंडिया)	सन् 2017, 2018
डॉ. बी.व्ही खरबडे, एन.आर.एल.सी. लखनऊ	सन् 2017
डॉ. मारुति नंदन प्रसाद तिवारी (ऐमिरेट्स प्रोफेसर, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय)	सन् 2018
डॉ. एस.एस. सिन्हा, वाराणसी	सन् 2018
डॉ. अर्पिता रंजन (भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण, दिल्ली)	सन् 2019
डॉ. ब्रजेश रावत, लखनऊ	सन् 2020

कायोत्सर्ग मुद्रा

जैन पहाड़ी के साधना शैलाश्रय में गुप्तकालीन उत्कीर्ण साधु की कायोत्सर्ग आकृति यहाँ दिगम्बर संतों की तीसरी सदी के पहले से श्री विहार की साक्ष्य है। इसी गुफा की दूसरी चट्टान पर उत्कीर्ण युगल चरण चिन्ह दिगम्बर संतों की साधना एवं प्रवास स्थली के साक्ष्य हैं।

अभिलेखीय साक्ष्य

यहाँ प्रतिहार कालीन (सातवीं सदी)
मूर्तियों के साथ
संवत् 1123 के ऋषभदेव
संवत् 1188 के उपाध्याय
संवत् 1195 के महावीर
संवत् 1202 के शांतिनाथ
संवत् 1203 के मानस्तंभ
संवत् 1490 की चौबीसी
संवत् 1548 के लघु पार्श्वनाथ
संवत् 1586 के ताम्र पार्श्वनाथ,
संवत् 1885 के विमलनाथ सहित
संवत् 2072 तक प्रतिष्ठित
कई मूर्तियाँ वेदियों में विराजमान हैं।

श्रेष्ठी पाहल

नवागढ़ में साबू पाहल की प्रशस्ति एवं मूर्ति खजुराहो में संगृहीत पाहल मूर्ति के समान है, जिससे यह सिद्ध होता है कि साबू पाहल ने नवागढ़ के साथ-साथ खजुराहो में भी मंदिरों का निर्माण संवत् 1011 में कराया था।

इसके साथ यहाँ श्रेष्ठी महिचन्द्र एवं साकल की मूर्ति भी संगृहीत है, जो चंदेल शासन में जैन श्रेष्ठियों के प्रभाव एवं वर्चस्व को दर्शाते हैं। आपने संवत् 1195 में महावीर प्रतिमा एवं संवत् 1203 में चारों मानस्तंभ की प्रतिष्ठा का सौभाग्य प्राप्त किया था।

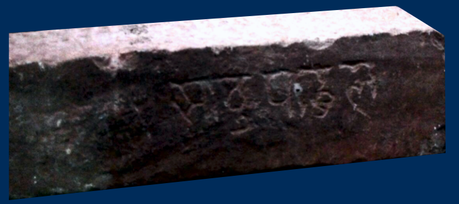

पंचतीर्थी पार्श्वनाथ बिम्ब

देशी पाषाण का उत्कृष्ट शिल्पयुक्त भगवान् पार्श्वनाथ का मनोज्ञ बिम्ब, जिसके सिंहासन के मध्य सर्प पूंछ का चिन्ह है, जो भगवा् को कुंडली आसन प्रदान करता हुआ सिरोपरि, आकर्षक 7 फण युक्त फणावली बनाता है। चंवरधारी, पुष्पमालधारी एवं मृदंग वादक की सुन्दर आकृति तथा ऊपर चार पद्मासन बिम्ब उत्कीर्ण हैं, जिनसे इसे पंचतीर्थी स्वरूप प्राप्त होता है।

पिच्छी चिन्ह सहित उपाध्याय–

यहाँ उपाध्याय परमेष्ठी की कई मूर्तियाँ अन्वेषित की गई हैं। मानस्तंभों में तीन ओर अरिहंत एवं एक ओर उपाध्याय का अंकन तथा शास्त्र सहित उपाध्याय, सर्वतोभद्र में उपाध्याय, तीर्थंकरों के समान आसन (पाढ पीठ) में मयूर पिच्छि का अंकन विशेष है। यह सभी बिम्ब यहाँ पुरातन गुरुकुल परम्परा को दर्शाते हैं।

ताम्रपार्श्वनाथ बिम्ब

संवत् 1586 में प्रतिष्ठित यह मनोज्ञ एवं अलौकिक बिम्ब अत्यंत प्रभावशाली है। जिसके पीतल समचौकोर आसन पर चारों ओर प्रशिस्त उत्कीर्ण है। सामने की ओर धरणेन्द्र एवं पद्मावती अपने वाहन मयूर और कूर्म सहित विराजमान हैं। आसन के ऊपर कमलाकृति पर ताम्र पार्श्वनाथ भगवान् विशेष आसन जिसमें केवल नितम्ब भाग आसन पर है, शेष जंघा एवं घुटने आसन से बाहर हैं, भगवान् के अधर में विराजमान होने का प्रतीक है।

चंदेल शासक मदनवर्मन

विनयावनत मुद्रा में दोनों हाथों के मध्य खंडित पुष्पमाला लिये चंदेल शासक मदनवर्मन की यह कृति विलक्षण है, इसके दाहिने शीर्ष पर जैन तीर्थंकर आकृति से सिद्ध होता है कि आप दिगम्बर जैनधर्म के प्रति समर्पित रहे हैं। आपने मदनपुर एवं मदनेशपुर (अहार) क्षेत्र की स्थापना के साथ महोबा, देवगढ़, पपौरा एवं नवागढ़ में भी जैन मंदिर बनवाये हैं
सौंदर्य एवं कला सौष्ठव, केश सज्जा एवं केश अलंकरण के साथ विशेष जूड़ा, कर्ण कुंडल, कंठाभरण, रत्तनहार, कठि मेखला, लहराता हुआ उत्तरीय, त्रिभंग मुद्रा, पाद विन्यास के साथ पैरों में नुपूर एवं कवधनी आदि आभरणों से सुसज्जित इस प्रतिमा में ग्रामीण जनों की आस्था बगाज माता के रूप में है।

तीर्थंकर माता

18वें तीर्थंकर अरनाथ की माता महारानी मित्रसेना का यह बिम्ब विशिष्ट, मनोज्ञ, आकर्षक, कमनीय भौंहोंयुक्त विशालाक्षी,सुन्दर केश विन्यास एवं अलंकरण के साथ कुण्डल, कंठहार, रत्तनहार, लम्बमाला से सुशोभित अनुपम सौन्दर्य युक्त अत्यंत विलक्षण है।

अकलंक-निकलंक

कुमार अकलंक एवं निकलंक, एक ही पाषाण फलक पर गलहार, स्तनहार, कटि मेखला सहित, विभिन्न आभूषणों से सुसज्जित बिम्ब, जिसमें अग्रज एवं अनुजाकृति स्पष्ट दृष्टव्य है। अग्रज के बायें हाथ में ताड़पत्रीय लम्ब शास्त्र एवं दाहिने हाथ में कलम नवागढ़ में प्राचीन गुरुकुल परम्परा के आदर्श को स्थापित करते हैं।

इन दोनों कुमारों में अकलंक एकपाठी एवं निकलंक द्विपाठी थे। ये दोनों कांची के बौद्ध मठ में गुप्त रूप में शिक्षा प्राप्त कर रहे थे। भेद खुलने पर जिनशासन के संरक्षण हेतु निकलंक ने बलिदान देकर अकलंक के प्राण बचाये थे।

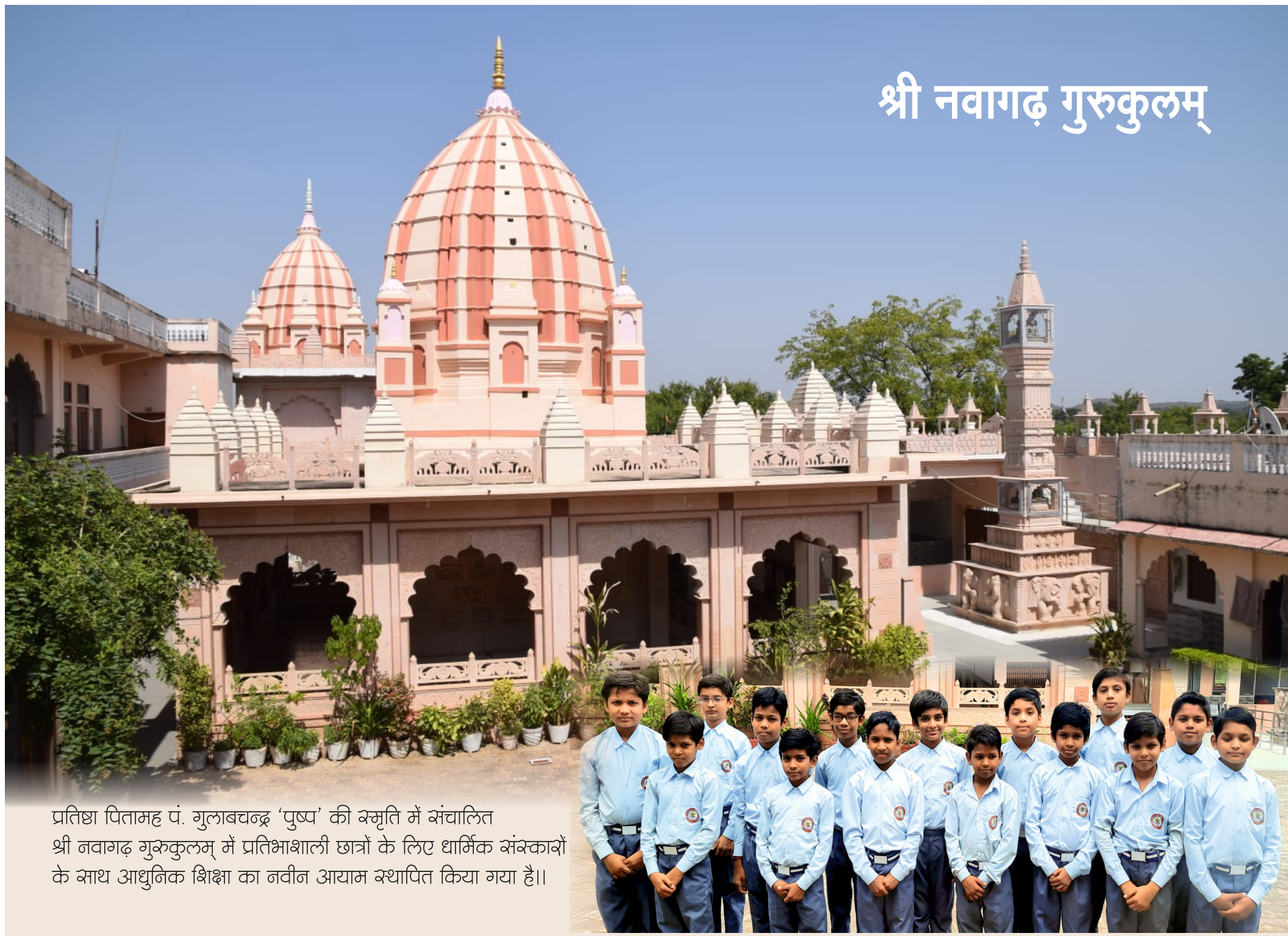

श्री नवागढ़ गुरुकुलम्

प्रतिष्ठा पितामह पं. गुलाबचन्द्र 'पुष्प' की स्मृति में संचालित श्री नवागढ़ गुरुकुलम् में प्रतिभाशाली छात्रों के लिए धार्मिक संस्कारों के साथ आधुनिक शिक्षा का नवीन आयाम स्थापित किया गया है।।

नवागढ़ महोत्सव

प्रतिवर्ष आयोजित नवागढ़ महोत्सव, बुन्देली लोककला, लोकनृत्य, लोकगीतों के साथ सांस्कृतिक एवं धार्मिक आयोजनों के लिए प्रसिद्ध है जिसमें हजारों श्रद्धालुओं का समर्पण दृष्टव्य है। **– गजरथ महोत्सव सन् 2011**